# लैंगिक भेदभाव के सामाजिक प्रतिरूप

**प्रिंयका कुमारी**

जेंडर शब्द का अर्थ है औरत और मर्द दोनों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिभाषा यानि समाज औरत व मर्द को किस तरह से देखता है, उन्हें कैसी भूमिकाएँ, अधिकार, संसाधन देता है, उन्हें किस तरह का व्यवहार व मानसिकता सिखाता है। संक्षेप में, लैंगिक असमानता किसी भी समाज में लिंग के आधार पर इनमें सामाजिक एवं आर्थिक असमानता का शोध करता है।

भारतीय समाज में लिंग भेदभाव का मूल कारण इसकी पितृसत्तात्मक व्यवस्था में निहित हैं। महिलाओं का शोषण भारतीय समाज की सदियों पुरानी सांस्कृतिक घटना है।प्रत्येक समाज में युवती एवं युवकों को अलग–अलग भूमिकाएँ सौंपी जाती है। किसी भी समाज में न तो उन्हें समान दर्जा प्राप्त होता है और न वे समान भूमिका का निर्वाह करते हैं। युवकों को युवतियों से अधिक सशक्त माना जाता है। जबकि युवतियों को कमनीय, कोमल और युवक को कठोर और अमेध माना जाता है जबकि युवती को कोमल तथा नाजुक युवकों को कमाऊ, घर–गृहस्थी का मुखिया और समुदाय का नेतृत्वधारक आदि, विशेषताओं से सम्बन्धित किया जाता है। इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया लैंगिकीकरण की प्रक्रिया से प्रभावित होती है।